डॉ. अनुराधा प्रियदर्शिनी
मथुरा, उत्तर प्रदेश

प्यार हमारा अमर रहेगा

साथी मेरे, प्यार हमारा, अमर रहेगा, इस जग में।
हाथ पकड़कर, साथ चलेंगे, मुश्किल हारे, हर पग में।।
कोमल है मन, प्रिय ही तन–मन, अर्पण सबकुछ, भाव भरे।
तुझसे ही बस, मेरी दुनिया, सजी हुई है, पुष्प झरे।।

इन नैनों में, चित्र बसा है, लगे मनोहर, जो चीतल।
स्वर्ण सरीखा, चमक बिखेरे, कंचन काया,अति शीतल।।
आओ प्रियतम, गीत प्रेम के, संग में गाओ, जो मधुरिम।
पिया मिलन की, सुधि बिसरे कब, प्रीति की बरखा, हो रिमझिम।।

पायल मेरी, छन–छन करती, तुझे बुलाए, नाम भजे।
दूर न जाओ, साथ रहो बस, रूप सजीला, क्यों तु तजे।।
भूल गया क्या, प्यारी कसमें, साथ लिए जो, थे हमने।
बाधाओं को, पार करेंगे, पूरे करने, हैं सपने।।

परिमल प्रेम विधान

संबंधों की रीति निभाता, परिमल प्रेम विधान।
पावन रिश्ता जब जुड़ जाता, होता नया विहान।।

स्वार्थ नहीं जब उसमें रहता, मिले सुखद संसार।
बूँद–बूँद से घट भर जाता, भर जाता भंडार।।
अंतर्मन आल्हादित होता, सुंदर जब संस्कार।
सात सुरों के मिलकर जैसे, मधुरिम हो झंकार।।

रिश्तों की बगिया सुरभित हो,महक उठे कचनार।
विविध रंग के पुष्प खिलें तब, कर देते गुलजार।।
मौन शब्द जब उनके पढ़कर, कर देते उपचार।
प्रीत रंग ऐसा चढ़ जाता, मिट जाए तकरार।।

नैना सजल कह देते बातें, अधर जहां हों मौन।
हृदय तार जब जुड़ जाते, जान पराया कौन।।
नेह की धारा अविरल बहे, प्रीत का हो विधान।
पावन रिश्ता जब जुड़ जाता, होता नया विहान।।

राग–द्वेष सब मिट जाते हैं, जहाँ प्रेम का राज।
द्वंद अगर कोई भी मन में, दृष्टि सदा हो बाज।।
जब भी विपदा का घेरा, गिराने लगे गाज।
संबंधों के अपनेपन से, प्रीत दिला दे ताज।।